वसुधैव कुटुम्बकमः वैश्विक शांति और भारत का नेतृत्व

डॉ. संजीव कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय सतपुली, खैरासैण, पौड़ी, गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

Correspondence Author: डॉ. संजीव कुमार

Received 1 Apr 2026; Accepted 12 May 2026; Published 29 May 2026

DOI: https://doi.org/10.64171/JSRD.5.S3.66-69

सारांश

वसुधैव कुटुम्बकम का प्राचीन भारतीय दर्शन, जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है", सभी राष्ट्रों और समुदायों के बीच सार्वभौमिक भाईचारे, आपसी सहयोग और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व पर जोर देता है। भू–राजनीतिक संघर्षों, आर्थिक अस्थिरता, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य आपात स्थितियों और व्यापक उत्तर–दक्षिण असमानताओं से चिह्नित समकालीन वैश्विक व्यवस्था में, इस दर्शन ने नए सिरे से प्रासंगिकता प्राप्त की है। यह पेपर भारत की जी20 प्रेसीडेंसी पर विशेष ध्यान देने के साथ वसुधैव कुटुम्बकम के चश्मे के माध्यम से वैश्विक शासन में भारत की नेतृत्व भूमिका की जांच करता है। द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित एक गुणात्मक और वर्णनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, अध्ययन विश्लेषण करता है कि कैसे भारत ने समावेशी विकास, सतत विकास, जलवायु कार्रवाई, वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा और न्यायसंगत वैश्विक निर्णय लेने को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। यह पत्र वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाने, बहुपक्षीय संस्थानों को मजबूत करने और वैश्विक चुनौतियों के लिए सर्वसम्मति–आधारित समाधानों को बढ़ावा देने के भारत के प्रयासों पर प्रकाश डालता है। यह तर्क देता है कि भारत का मूल्य–संचालित नेतृत्व वैश्विक शासन में एक मानक परिवर्तन को दर्शाता है, जहां संकीर्ण राष्ट्रीय हितों पर नैतिक जिम्मेदारी, सामूहिक कल्याण और स्थिरता को प्राथमिकता दी जाती है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि वसुधैव कुटुंबकम तेजी से परस्पर जुड़े हुए विश्व में वैश्विक शांति और समावेशी वैश्विक शासन प्राप्त करने के लिए एक सार्थक ढांचा प्रदान करता है।

मूलशब्दः वसुधैव कुटुम्बकम, वैश्विक शांति, वैश्विक शासन, भारत का नेतृत्व, जी20 प्रेसीडेंसी, वैश्विक दक्षिण

परिचय

वसुधैव कुटुम्बकम एक प्राचीन अवधारणा है जिसकी जड़ें भारतीय ग्रंथों, विशेष रूप से महापनिषद और वेदों में निहित हैं। शाब्दिक रूप से "दुनिया एक परिवार है" के रूप में अनुवादित, यह सभी जीवित प्राणियों की मौलिक एकता, परस्पर जुड़ाव और परस्पर निर्भरता पर जोर देता है। यह दर्शन मानवता को राष्ट्र, धर्म, नस्ल और संस्कृति की सीमाओं से परे एक एकल वैश्विक समुदाय के हिस्से के रूप में देखता है।[1] अनादिकाल से, भारतीय विचार मानवता के सामूहिक भविष्य, सद्भाव, सहयोग, सह–अस्तित्व और सार्वभौमिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए गहराई से चिंतित रहे हैं। इस दर्शन की स्थायी प्रासंगिकता सर्वे भवंतु सुखिनाह, सर्वे संतु निरमयाह जैसे भारतीय आदर्शों में परिलक्षित होती है, जो सभी के लिए शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि के दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं।[2]

एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत के रूप में वसुधैव कुटुम्बकम

वसुधैव कुटुम्बकम का सिद्धांत वैश्विक सभ्यताओं और धर्मों में पाए जाने वाले समान विचारों के साथ प्रतिध्वनित होता है। मूल अमेरिकियों के बीच मिताकुए ओयासिन और अफ्रीका में उबंटू जैसी स्वदेशी परंपराएं साझा अस्तित्व के समान लोकाचार को दर्शाती हैं।[3] प्रमुख विश्व धर्म ईसाई धर्म के स्वर्ण नियम, इस्लाम की तौहिद और आपसी निर्भरता की अवधारणा और बौद्ध धर्म के इंद्र के जाल जैसी शिक्षाओं के माध्यम से इस परस्पर जुड़े विश्व दृष्टिकोण को मजबूत करते हैं। ये साझा मूल्य सामूहिक जिम्मेदारी, सहयोग और अहिंसा की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं, विशेष रूप से युद्ध, आतंक और सामाजिक विखंडन द्वारा चिह्नित वैश्विक संकट के समय में।

भारत के सभ्यतागत मूल्य और वैश्विक दृष्टिकोण

भारत की सभ्यता के लोकाचार ने लगातार सहिष्णुता, बहुलवाद, संवाद और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व पर जोर दिया है। महात्मा गांधी सहित संतों, ऋषियों और सुधारकों ने अहिंसा और नैतिक नेतृत्व की वकालत करते हुए कहा कि भारत के उदय को अन्य राष्ट्रों को कमजोर करने के बजाय मजबूत होना चाहिए। इस नैतिक नींव ने भारत की विदेश नीति को आकार दिया है, जो रणनीतिक स्वायत्तता, बहुपक्षवाद और मानवीय जुड़ाव से चिह्नित है।[4] भारत का दर्शन आक्रामकता, एकतरफा प्रतिबंधों और अन्य राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप को हतोत्साहित करता है, इसके बजाय सामान्य चिंता के मुद्दों पर रचनात्मक जुड़ाव और वैश्विक सहमति की वकालत करता है।

उद्देश्य

- वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन और वैश्विक शांति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए इसकी प्रासंगिकता की जांच करना।
- समकालीन वैश्विक चुनौतियों से निपटने में वैश्विक शासन में भारत की नेतृत्व भूमिका का विश्लेषण करना, विशेष रूप से इसकी जी20 अध्यक्षता के माध्यम से।

शोध विधि

वर्तमान अध्ययन वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन और वैश्विक शासन में भारत की नेतृत्व भूमिका की जांच करने के लिए एक गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति को अपनाता है, विशेष रूप से जी20 मंच के माध्यम से। शोध पूरी तरह से डेटा के

द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें किताबें, सहकर्मी–समीक्षित पत्रिका लेख, सरकारी रिपोर्ट, संयुक्त राष्ट्र दस्तावेज, जी20 आधिकारिक प्रकाशन, नीति संक्षिप्त विवरण और विश्वसनीय संस्थागत वेबसाइट शामिल हैं। वैश्विक शांति, सतत विकास, आर्थिक शासन, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, भू–राजनीतिक मुद्दों और उत्तर–दक्षिण संबंधों से संबंधित मौजूदा विद्वतापूर्ण कार्यों को एकत्र करने और उनका आलोचनात्मक विश्लेषण करने के लिए एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है।

परिणाम

वसुधैव कुटुम्बकम का भारत का दर्शन

वीके महा उपनिषद और प्राचीन वेदों [5] से आता है। भारतीय दर्शन "पूरे ब्रह्मांड को एक परिवार" के रूप में वर्णित करता है। यह सभी जीवित चीजों को परस्पर संबंधित, मानवता को प्राथमिकता देने के रूप में भी देखता है। वीके से पता चलता है कि विश्व स्तर पर लोग सहयोग, सम्मान, आपसी समर्थन, बंधुत्व और शांतिपूर्ण सहवास के माध्यम से एक–दूसरे की भलाई की परवाह करते हैं। आधुनिक दर्शन सरकारों को अंतर्राष्ट्रीय शांति, पर्यावरणीय स्थिरता और मानव सुधार पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।[6] वीके को पुनर्जीवित करने और दुनिया को प्रेरित करने के लिए भारत की जी20 अध्यक्षता की पहल वैश्विक शासन की दिशा में एक बड़ा कदम है। भारत के आधिकारिक जी20 पत्रों ने वीके की अंग्रेजी का अर्थ "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य"[7] अपनाया। भारत ने अपने जी20 नेतृत्व के दौरान समावेशी आर्थिक विकास, जलवायु वित्त, पर्यावरणीय स्थिरता, एसडीजी प्रगति, बहुपक्षीय संस्थानों और महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास पर ध्यान केंद्रित किया। वी. के. दर्शन वैश्विक सहयोग और सहयोगी निर्णय लेने को प्रोत्साहित करता है।

वैश्विक शासन के एक संस्थान के रूप में जी20

1997-1998 के आर्थिक संकट से कई एशियाई देशों के तबाह होने के बाद, G20 का गठन किया गया था। वर्तमान संकट से पता चलता है कि दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक मुद्दों को जी7 की तुलना में एक बड़े और अधिक समावेशी मंच की आवश्यकता है। जी20 की स्थापना वित्तीय संकट प्रतिक्रियाओं का समन्वय करने और 19 देशों और यूरोपीय संघ के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों को एक साथ लाकर अर्थव्यवस्थाओं को स्थिर करने के लिए की गई थी। हालाँकि, यह जल्द ही वैश्विक नेताओं की शिखर सभाओं के लिए एक मंच बन गया [8]। 2023 में भारत की अध्यक्षता ने ए. यू. को मंच का 21वां सदस्य बनाया। एक नए गुट ने मंच को मजबूत किया, वैश्विक दक्षिण विचारों को मजबूत किया और निष्पक्ष अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को प्रतिबिंबित किया। 2008 के एशियाई वित्तीय संकट ने जी–20 को वैश्विक आर्थिक शासन में सबसे आगे कर दिया।[9] इसने मंत्रिस्तरीय बैठकों के बजाय राज्य और सरकारी शिखर सम्मेलनों की मेजबानी की। इस बदलाव ने जी20 को नीतियों का समन्वय करने, आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देने और वित्त के बाहर वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने की अनुमति दी। केंद्रीय बैंक के गवर्नरों और वित्त मंत्रियों की पहली बैठक दिसंबर 1999 में हुई थी। जी20 के पहले 20 सदस्यों में यूरोपीय संघ, जी7 ब्रिक्स और अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं शामिल थीं। शुरू से ही संगठन ने वित्त पर ध्यान केंद्रित किया।[10] 2008 की वैश्विक मंदी के बाद जी–20 ने वैश्विक महत्व हासिल कर लिया। सरकारी नेताओं ने अगले वर्ष जी–20 में भाग लिया। महत्वपूर्ण वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के साथ, G20 वैश्विक आबादी का 67% और GDP का 90% है। जी20 को एक "ट्रोइका" द्वारा चलाया जाता है जिसमें राज्य के छोड़ने वाले, मौजूदा और आने वाले नेता शामिल होते हैं। भारत ने विकासशील देशों इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील [11] के "ट्रोइका" का नेतृत्व किया। जी20 के पास वित्तीय और चरवाहे ट्रैक हैं। अपनी स्थापना के समय, जी20 ने षवित्त मार्गष का अनुसरण किया, जिसमें बैंकर और केंद्रीय बैंकर शामिल थे। ष्शेरपा ट्रैकष्, जिसमें जी20 के लक्ष्य शामिल हैं, का नेतृत्व प्रमुख राजनयिकों या अधिकारियों ने किया था।

वैश्विक शासन में भारत की भागीदारी और भूमिका

भारत उपनिवेश से दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में चला गया। भारत एक वैश्विक शक्ति बन रहा है। हम भारत की वैश्विक भूमिका और स्वायत्त विदेश नीति को जानते हैं। गुटनिरपेक्ष आंदोलन और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता की महत्वाकांक्षाओं ने भारत को प्रसिद्ध बना दिया।[12] भारत का वैश्विक निर्णय बहुपक्षवाद, समावेशी विकास, समानता और सभी के कल्याण को प्राथमिकता देता है। भारत ने जनसंख्या में चीन को पीछे छोड़ दिया और पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। एक विशाल उपभोक्ता आधार, सेवा और औद्योगिक क्षेत्रों का विस्तार और एक अनुकूल विदेशी निवेश वातावरण वैश्विक अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है। भारत की युवा आबादी, कुशल उद्योग और लोकतांत्रिक लाभांश से दुनिया को लाभ होता है। दक्षिण एशिया में अपनी रणनीतिक स्थिति के साथ, भारत मध्य, मध्य और दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ सकता है[13]। नौसेना और सैन्य क्षमताएं भारत को दक्षिण एशियाई भू–राजनीतिक महाशक्ति बनाती हैं।

भारत हिंद–प्रशांत को समावेशी और विनियमित रखने के लिए काम करता है। भारतीय संस्कृति, साहित्य, भाईचारे, योग और आयुर्वेद ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सॉफ्ट पावर को बढ़ावा दिया है। विज्ञान, साहित्य, चंद्रमा मिशन, अंतरिक्ष अन्वेषण और सूचना प्रौद्योगिकी में भारत ने दुनिया भर में योगदान दिया है। बहुपक्षीय संस्थान, पड़ोस की नीतियां और सहकारी कूटनीति भारतीय विदेश नीति की प्राथमिकताएं हैं। भारत ने हमेशा पड़ोसियों और अन्य राज्यों के साथ सहयोग करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मामलों में रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी है। भारत संयुक्त राष्ट्र, डब्ल्यूटीओ, आईएमएफ, विश्व बैंक, ब्रिक्स और अन्य में भाग लेता है। भारत संयुक्त राष्ट्र और उसकी एजेंसियों में बदलाव करना चाहता है। भारत सभी की वैश्विक भागीदारी की वकालत कर रहा है। भारत संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में एक प्रमुख योगदानकर्ता है, जो हिंसा और आक्रामकता से ऊपर अंतर्राष्ट्रीय शांति, बातचीत, बहस और स्थिरता को बढ़ावा देता है।[14]

भारत की जी–20 अध्यक्षता–वैश्विक शासन में प्रभाव और योगदान

भारत ने सितंबर 2023 में अपने पहले जी20 नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी की, जिसमें कई राष्ट्राध्यक्षों और प्रतिनिधिमंडलों ने भाग लिया। भारत, एक लोकतांत्रिक और बहुपक्षीय देश, ने सभी के लिए प्रभावी वैश्विक समाधानों को अपनाकर बहादुरी दिखाई है। जी–20 शिखर सम्मेलन एक वार्षिक कार्यक्रम है। इस समूह का कोई सचिवालय नहीं है और इसे अतीत, वर्तमान और भविष्य के अध्यक्षों की तिकड़ी का समर्थन प्राप्त है।[15] 2023 में, "तिकड़ी" की सूची में इंडोनेशिया, ब्राजील और भारत शामिल हैं। भारत ने एक नए युग की शुरुआत की जिसमें विकासशील दुनिया वैश्विक विमर्श में वैश्विक

दक्षिण के मुद्दों को उजागर करके दुनिया का नेतृत्व करती है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत ने समावेशिता को बढ़ावा देकर और सभी को लाभान्वित करके जी20 की अध्यक्षता को लोगों का अध्यक्ष बनाया।[16] भारत द्वारा वी. के. को बढ़ावा देना एक वैश्विक शक्ति केंद्र और ज्ञान प्रदाता, या ष्विश्वगुरुष् बनने की उसकी इच्छा को रेखांकित करता है।

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) वैश्विक प्रतिबद्धताएं और प्रगति

2030 तक मानव जाति, पर्यावरण और आर्थिक विकास के लिए वैश्विक लक्ष्यों को सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा में रेखांकित किया गया है। वैश्विक प्रयासों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी पीछे न छूटे और उनका भविष्य उज्जवल हो।[17] इनमें अदीस अबेबा समझौता, पेरिस समझौता, यूएनएफसीसीसी, जैविक विविधता पर सेंडाई कन्वेंशन का सीबीडी, 2030 एजेंडा में केएमजीबीएफ और यूएनएफसीसीसी शामिल हैं। हरित विकास समझौता कम कार्बन विकास और जलवायु वित्त पोषण को बढ़ावा देता है। भारत ने हरित जीवन शैली के लिए पर्यावरण के लिए लाइफ–लाइफस्टाइल का समर्थन किया। नई दिल्ली ने वैश्विक स्वास्थ्य सेवा, महामारी की तैयारी और वन हेल्थ में सुधार के लिए अध्यक्ष के रूप में जी20 वैश्विक स्वास्थ्य डिजिटल पहल की शुरुआत की।[18] भारतीय जी20 प्रेसीडेंसी, ष्एक पृथ्वी–एक परिवार–एक भविष्यष् विषय के साथ, 2030 एजेंडा के कार्यान्वयन के बीच में है और इसके प्रभाव का आकलन करने और इसके कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए जी20 के भविष्य के प्रक्षेपवक्र का मार्गदर्शन करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

भारत और वैश्विक आर्थिक शासन

महामारी, यूक्रेन संकट और अन्य भू–राजनीतिक मुद्दों ने वैश्विक आर्थिक मंदी, आपूर्ति श्रृंखला के मुद्दों और आर्थिक असमानताओं का कारण बना है। आधुनिक वैश्विक आर्थिक शासन को इन समस्याओं से चुनौती मिलती है। जी–20 वैश्विक आर्थिक पुनरुत्थान और विकास के लिए आवश्यक है। दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में, भारत वैश्विक आर्थिक नीति को प्रभावित करता है। भारत वैश्विक आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देता है। जी20 के अध्यक्ष के रूप में, भारत ने वैश्विक शासन प्रणाली को उपयोग में आसान बनाने पर जोर दिया। भारत ने मजबूत और लचीले आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी।[19] भारत ने महामारी के बाद वैश्विक आर्थिक सुधार उपायों में महत्वपूर्ण सहायता की। भारत में आर्थिक नीति का उद्देश्य विकासशील और कम विकसित देशों को सतत विकास और आर्थिक विकास प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। भारत विश्व बैंक, आईएमएफ और डब्ल्यूटीओ का बहुत सम्मान करता है।

भू–राजनीतिक संघर्ष, युद्ध और वैश्विक आक्रमण

वैश्विक भू–राजनीतिक मुद्दे और आक्रामकता बहुपक्षीय संस्थानों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को बाधित कर रहे हैं। रूस–यूक्रेन संघर्ष, ताइवान या भारत की सीमाओं के खिलाफ चीनी आक्रामकता और अमेरिका–चीन हिंद–प्रशांत शक्ति संघर्ष जैसी भू–राजनीतिक घटनाएं वैश्विक चिंताओं को बढ़ाती हैं। संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक शासन संरचना रूस–यूक्रेन विवाद को हल करने में विफल रही। एक बहुराष्ट्रीय संगठन के रूप में, जी20 कई भू–राजनीतिक हितों का प्रतिनिधित्व करता है। कई भू–राजनीतिक चिंताओं को संभालने के लिए, आम सहमति बनाने की प्रक्रियाओं और साझा निर्णय लेने के मंचों की आवश्यकता है।[20] भारत वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए बहुपक्षीय कूटनीति, खुले संचार और सर्वसम्मति–निर्माण पर जोर देता है। भारत दक्षिण–उत्तर तनाव को रोकने और विश्व एकता को बढ़ावा देने के लिए दृढ़ संकल्पित है। भारत ने यूक्रेन संकट के दौरान शत्रुता और हिंसा के बजाय अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शांति की वकालत करके सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान किया।[21]

वैश्विक व्यवस्था में उत्तर–दक्षिण विभाजन को संबोधित करना

उपनिवेशवाद के दौरान दुनिया भर में उत्तर–दक्षिण विभाजन शुरू हुआ। उत्तर–दक्षिण विभाजन सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक कारकों के कारण होते हैं। निम्न और विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक दक्षिण बनाती हैं, जबकि औपनिवेशिक, औद्योगिक और औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक उत्तर बनाती हैं। कई उत्तर–दक्षिण देशों में अलग–अलग आर्थिक, विकास, विकास, ग्रीनहाउस गैस, ऊर्जा संक्रमण, प्रवास, खाद्य सुरक्षा और गरीबी की चुनौतियां हैं। वैश्विक उत्तर राज्य संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय संस्थानों को नियंत्रित करते हैं। असमानताओं के बावजूद, ग्लोबल साउथ के लोगों का इस तरह के मंचों पर बहुत कम कहना है। रूस–यूक्रेन युद्ध और कोविड–19 महामारी ने दुनिया भर में खाद्य, ऊर्जा और ऋण संकट पैदा कर दिया। ये मुद्दे गरीबों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं[22]। जी–20 विकसित और विकासशील देशों को सामूहिक निर्णय लेने के माध्यम से वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने की अनुमति देता है।

निष्कर्ष

वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन, जो भारत की सभ्यता के लोकाचार में निहित है, दुनिया को एक परस्पर जुड़े परिवार के रूप में देखकर समकालीन वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण प्रदान करता है। भू–राजनीतिक संघर्षों, आर्थिक अनिश्चितता, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य संकट और उत्तर–दक्षिण असमानताओं के बढ़ते दौर में, भारत का नेतृत्व–विशेष रूप से अपनी जी20 अध्यक्षता के माध्यम से–वैश्विक शासन में इस दर्शन की व्यावहारिक प्रासंगिकता को दर्शाता है। बहुपक्षवाद, सतत विकास, जलवायु कार्रवाई, वैश्विक स्वास्थ्य सहयोग, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक दक्षिण की सामूहिक आवाज को बढ़ावा देकर, भारत ने एक अधिक न्यायसंगत और सर्वसम्मति–संचालित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने में योगदान दिया है।

संदर्भ सूची

1. कृष्णा वारियर ए. जी. महा उपनिषद। मद्रासः थियोसोफिकल सोसायटी, 1953।
2. बडियानी एच. जी. हिंदू धर्मः प्राचीन ज्ञान का मार्ग खहिंदू धर्मः प्राचीन ज्ञान का मार्ग, 2008। आईएसबीएन 978–0–595–70183–4।
3. शाह एस, राममूर्ति वी. भावपूर्ण निगम। स्प्रिंगर साइंस, 2014। https://doi-org/10-1007/978–81–322–1275–1
4. विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन। (द.क.) वसुधैव कुटुम्बकमः समकलीन समरिक वस्तवित्ता के लिए भारत की प्राचीन सोच की प्रसादिका। नई दिल्लीः लेखक।

5. रावत, वाई. जी20: कैसे भारत का एजेंडा प्रचार हिंदू मूल्यों में गहना से निहित है [पर्चा, 2022।
6. सिन्हा, ए. भारत वसुधैव कुटुम्बकम के लिए एक आंदोलन के रूप में जी20 का नेतृत्व कर सकता है। द इकोनॉमिक टाइम्स, 2022। https://economictimes-indiatimes-com/news/india/viewindia&can&lead&g20&as&a&movment&for&vasudhaivakutumbakam/articleshow/95656659-cms
7. हैदर, एस. केंद्र ने जी20 में वसुधैव कुटुम्बकम के उपयोग का बचाव किया क्योंकि चीन ने आपत्ति जताई है। द हिंदू, 2023। https://www-thehindu-com/news/national/centre&defends&use&of&vasudhaiva&kutumbakam&in&g20&as&china&raises&objections/article67184856-ece
8. अली, एमए, और कामाराजू, एम भारत की जी20 अध्यक्षता–उपलब्धियां, चुनौतियां और प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट रिसर्च. 2023:11:(4):100–106।
9. ब्रैडफोर्ड, सी., और लिम, जे. जी–20 शिखर सम्मेलनों का इतिहास: वैश्विक नेतृत्व की विकसित गतिशीलता। जर्नल ऑफ ग्लोबलाइजेशन एंड डेवलपमेंट, 2012, 2(2) https://doi-org/10-2202/1948&1837-1042
10. भाटिया, आर. जी20 के प्रमुख और नई दिल्ली के संकल्प। द हिंदू, 2022 अगस्त 24।
11. गौतम ए. भारत और जी20: वैश्विक शासन को मजबूत करना और आकार देना। ई. पी. आर. ए. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 2022, 8(10).
12. आर्थिक सहयोग और विकास संगठन। (द.क.) ओईसीडी और जी20। https://www-oecd-org/en/about/oecd&and&g20-html
13. मोहन एस, अब्राहम जे. सी. महाद्वीपीय और समुद्री युद्धक्षेत्र को आकार देना? दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में चीन–भारत रणनीतिक प्रतिस्पर्धा। जर्नल ऑफ नेशनल मैरीटाइम फाउंडेशन ऑफ इंडिया. 2022:16:(1):82–97।
14. सिंह, बी, सिंह, एस, सिंह, बी, और चट्टू, वी. के. कोविड–19 महामारी के दौरान भारत की पड़ोसी वैक्सीन कूटनीति: मानवीय और भू–राजनीतिक दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज. 2023:58(6):1021–1037। https://doi-org/10-1177/00219096221116775
15. बानिक, डी., और मैडसेन, ई. बहुध्रुवीय दुनिया में दक्षिण–दक्षिण सहयोग और वैश्विक विकास: अफ्रीका में चीन और भारत। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेंट. 2023:35(4):539–548A https://doi-org/10-1002/jid-3620
16. फॉकनर, आर. (2016) पेरिस समझौता और अंतर्राष्ट्रीय जलवायु राजनीति का नया तर्क। अंतर्राष्ट्रीय मामले, 92 (5) 1107–1125। https://doi-org/10-1111/1468&2346-12708
17. पाठक, एच. (2022) भारतीय कृषि में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, अनुकूलन और शमन। पर्यावरण निगरानी और मूल्यांकन, 195 (1) 52- https://doi-org/10-1007/s10661&022&10421&4
18. लस्कर, आर. (2023) भारत जी20 में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हरित विकास समझौते को आगे बढ़ाएगा: जयशंकर हिंदुस्तान VkbElA https://www-hindustantimes-com/india&news/india&to&push&green&development&pact&to&tackle&climate&change&at&g20&jayishankar&101673612449823-html
19. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार। (द.क.) वैक्सीन की आपूर्ति। https://www-mea-gov-in/vaccine&supply-htm
20. सूरी, एस. (2023) भारत की अध्यक्षता में खाद्य सुरक्षा में सुधार के लिए जी20 एजेंडा। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन।
21. जॉनी, एस. (2023) यूक्रेन युद्ध पर भारत का रुख। द हिंदू। https://www-thehindu-com/opinion/lead/positing&indias&stand&on&the&ukraine&war/article66573033-ece
22. संयुक्त राष्ट्र। (2022) संयुक्त राष्ट्र के वरिष्ठ अधिकारी ने दूसरी समिति को यूक्रेन युद्ध और महामारी के संयुक्त प्रभाव के बारे में चेतावनी दी है जो लाखों लोगों को अत्यधिक गरीबी में धकेल रहा है https://press-un-org/en/2022/gaef3571-doc-html.